देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 22 ISSUE-3(2) (सितम्बर 2025) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादिका :
डॉ. पूर्णिमा एस.,
डॉ. अनुराधा पी.,
मिस वी. अमुधा

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285–289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290–293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294–300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	311-315
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352–355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356–360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा–साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361–365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366–369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370–375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376–381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382–386
69.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387–392

70.	21वीं सदी के नारी विमर्श–रेत समाधि	पूर्णिमा. जे, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	393–397
71.	'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श	प्रिया. एस, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	398–403
72.	21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श	श्री एम. संजीवी कनी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	404–411
73.	पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)	वेंकट शिल्पा काकि, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	412–416
74.	21वीं सदी के आधुनिक हिन्दी उपन्यास बेहया में केंद्रित नारी	अमरजीत	417–422
75.	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	Mrs. S. Subha	423-425
76.	भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ	आर. डी. निर्मला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	426–430
77.	पर्यावरण विमर्श और 21वीं सदी के उपन्यास	संगीता कुमारी	431–435
78.	समकालीन साहित्य में किसान विमर्श	इ. जाक्कुलिन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	435–442
79.	इक्कीसवीं शताब्दी में उपन्यास–साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. के आनंदी	443–446

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 398-403

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श

प्रिया. एस, पी. एच. डी. शोधार्थी
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, शोध निर्देशिका, सहायक आचार्या एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एवं एडवांस स्टडीज, (VISTAS) चेन्नई, तमिलनाडु।

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में व्यंग्य एक ऐसी विधा है जो समाज और राजनीति के अंतर्विरोधों को हँसी और कटाक्ष के सहारे सामने लाती है। व्यंग्य केवल हास्य का साधन नहीं है, बल्कि यह विचार और विमर्श का भी माध्यम है। आधुनिक हिंदी व्यंग्यकारों में सुरेंद्र शर्मा का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। वे कविता, गद्य और मंचीय हास्यकृसभी रूपों में राजनीति और समाज की विसंगतियों को सहज भाषा में प्रस्तुत करने में माहिर हैं। उन्होंने हास्य और व्यंग्य को केवल मनोरंजन का साधन न बनाकर उसे सामाजिक–राजनीतिक चेतना का माध्यम बनाया। उनके व्यंग्य में समाज के भीतर छिपे हुए विरोधाभास, विडंबनाएँ और पाखंड उजागर होते हैं। 'बुद्धिमानों की मूर्खता' निबंध में उनका ऐसा व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण है जो केवल व्यक्ति की बौद्धिक विफलताओं की आलोचना नहीं करता, बल्कि सत्ता, राजनीति और समाज में सक्रिय उन प्रवृत्तियों को भी सामने लाता है जिनसे आम जनता का जीवन प्रभावित होता है। इस निबंध संग्रह में इस तथ्य को सामने लाया गया है कि राजनीति में तथाकथित 'बुद्धिमान' नेता और नीति–निर्माता अकसर ऐसे निर्णय ले लेते हैं जो आम जन के लिए हास्यास्पद या विनाशकारी सिद्ध होते हैं। सुरेंद्र शर्मा ने अपने व्यंग्य के माध्यम से "नए विमर्श" – विशेषकर वंचित वर्गों की आवाज, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श और श्रमिक संघर्ष कृ के संदर्भ में बुद्धिजीवियों की विडंबनापूर्ण भूमिका को उजागर किया है। इसे व्यक्त करने का अल्प प्रयास इस शोध आलेख में किया गया है।

सारांश (Abstract) :

हिंदी व्यंग्य साहित्य ने हमेशा समाज की गहराइयों में छिपी विसंगतियों और राजनीतिक दुरावों को सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लेखक 'सुरेश कांत' कृत – के अनुसार "हिंदी व्यंग्य लेखन हथियार और जादू की छड़ी के रूप में एक साथ विकसित हुआ है।"[1] सुरेंद्र शर्मा की कृति 'बुद्धिमानों की मूर्खता' इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। इसमें वे उन तथाकथित बुद्धिजीवियों और नेताओं को केंद्र में रखते हैं, जिनकी प्रवृत्तियाँ समाज की प्रगति को बाधित करती हैं। यह आलेख इस बात की विवेचना करता है कि किस प्रकार शर्मा जी

1. हिंदी गद्य लेखन में व्यंग्य और विचार – सुरेश कान्त – पृ. सं.– 383

का व्यंग्य "नए विमर्श" –विशेषतः दलित, स्त्री और श्रमिक विमर्श को आवाज देता है और समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों की वास्तविक समस्याओं को उजागर करता है। इसके साथ ही यह भी प्रतिपादित होता है कि व्यंग्य मात्र मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और राजनीतिक हस्तक्षेप का प्रभावी साधन है।

Keywords :

सुरेंद्र शर्मा, बुद्धिमानों की मूर्खता, व्यंग्य साहित्य, राजनीतिक व्यंग्य, नया विमर्श, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, श्रमिक विमर्श, हास्य–व्यंग्य, सामाजिक चेतना।

राजनीतिक विमर्श की अवधारणा :

राजनीति का सामान्य अर्थ है – राज्य और शासन से संबंधित कार्य, जिनमें सत्ता प्राप्त करना, उसका संचालन करना और समाज के लिए नीतियाँ बनाना शामिल है। महान भारतीय दार्शनिक कौटिल्य के अनुसार, राजनीति राज + नीति से बना है, जिसका अर्थ है एक विशेष नीति के द्वारा शासन करना और जनता के सामाजिक और आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाना।

राजनीतिक विमर्श वह प्रक्रिया है जिसमें सत्ता, जनता और नीति–निर्माण से जुड़ी चर्चाएँ होती हैं। यह समाज में सत्ता, शासन, नीति, लोकतंत्र, अधिकार और दायित्व जैसे विषयों से संबंधित होता है। इसमें राजनीतिक विचारधाराएँ (जैसे लोकतंत्र, समाजवाद, पूँजीवाद आदि) होती हैं। यह समाज के महत्वपूर्ण बिंदुओं जैसे – गरीबी, शिक्षा, स्वास्थ्य, समानता, न्याय आदि विषयों पर अपना विचार प्रकट करता है। राजनीतिक विमर्श एक मात्र उद्देश्य आम जनता में राजनीतिक चेतना का विकास करना है।

राजनीति केवल शासन और सत्ता का नाम नहीं है। राजनीति का वास्तविक उद्देश्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति को न्याय, अवसर और सुरक्षा प्रदान करना है। परंतु समय के साथ राजनीति अक्सर केवल सत्ता–प्राप्ति का साधन बन जाती है।

सुरेंद्र शर्मा की व्यंग्य दृष्टि :

हिंदी साहित्य में व्यंग्य मात्र हास्य उत्पन्न करने का साधन नहीं रहा, बल्कि यह राजनीति और समाज पर गहरी टिप्पणी करने का माध्यम रहा है। भारतीय लोकतंत्र में नेताओं, बुद्धिजीवियों और विचारकों के बीच अक्सर दूरी देखने को मिलती है जो उनके कथन और आचरण में झलकती है। इस विडंबना को शर्मा जी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। "समस्या का समाधान इसलिए नहीं किया जाता कि एक तरफ नेता बाढ़ से कमाता है, दूसरी तरफ सूखे से। जनता चाहे सूखाग्रस्त इलाके में हो या बाढ़ग्रस्त इलाके में, उसे तो पानी–पानी कहकर ही दम तोड़ना है।"[2] देश के गरीब और लाचार लोगों के पेट में लात मारकर नेताएँ अमीर बन गए।

सुरेंद्र शर्मा इस परंपरा में ऐसे व्यंग्यकार हैं जो राजनीति की चालबाजियों, नेताओं के खोखले वादों और बुद्धिजीवियों की आत्ममुग्धता को हास्य के माध्यम से उजागर करने में अत्यंत सफल हैं। वे कठिन विषयों को सरल भाषा और चुटीले अंदाज में कह देते हैं। यही कारण है कि उनके व्यंग्य केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित नहीं रहते, बल्कि ग्रामीण और शहरी दोनों स्तरों पर समान रूप से असर डालते हैं। वे मुहावरों, लोकोक्तियों और

2. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ–सुरेंद्र शर्मा–सिर्फ सोफा बेच देने से समस्या हल नहीं हो जाती, पृ. सं.–25
3. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ–सुरेंद्र शर्मा–कैसे–कैसे कंधे कैसे–कैसे धंधे – पृ. सं.–24

तात्कालिक उदाहरणों का प्रयोग करते हैं। जैसे– "अगर सारे देशवासी कंधे से कंधा मिलाकर चलें तो विकासशील कहलाते हैं और कंधे से कंधा भिड़ाकर चलें तो पिछड़े हो जाते हैं।"[3] इनकी शैली में "हँसी के साथ गंभीरता" का अद्‌भुत संतुलन दिखाई देता है। जैसे – "कभी फ्रांस की महारानी ने अपने देश के भूखे लोगों को देखकर कहा था कि इन्हें ब्रेड नहीं मिलती तो यह केक क्यों नहीं खाते?"[4]

राजनीतिक व्यंग्य की सामाजिक प्रासंगिकता :

सुरेंद्र शर्मा की व्यंग्यात्मक निबंध संग्रह, 'बुद्धिमानों की मूर्खता' राजनीतिक विमर्श को नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है।

- यह दिखाती है कि राजनीति जनता की समस्याओं से कितनी दूर जा चुकी है।
- यह हमें सिखाती है कि बुद्धिमानी का अर्थ केवल भाषण और योजनाएँ नहीं, बल्कि कारगर सफलतापूर्वक समाधान है।
- यह व्यंग्य उस कठोर सत्य को उजागर करती है कि कभी–कभी "मूर्ख जनता" नेता को वास्तविकता से अधिक महत्वपूर्ण स्थान देती है।

इस रचना के अनुसार, राजनीति केवल सत्ता संघर्ष का खेल नहीं है, बल्कि यह जनता के सपनों और संघर्षों का आईना भी बनती है।

बुद्धिमानों की मूर्खता : अवधारणा :

'बुद्धिमानों की मूर्खता' एक ऐसी स्थिति है जिसमें विद्वान या बुद्धिजीवी अपनी कथित विद्वता के अहंकार में वास्तविकता से कट जाते हैं। वे समाज और राजनीति की बुनियादी समस्याओं को हल करने के बजाय उन्हें उलझाते हैं।

"यह एक सार्वभौम सत्य है कि संसार में जितनी विनाशलिलाएँ, रक्तपात और मानवताविरोधी क्रूर कृत्य हुए हैं –वे सब बुद्धिमानों की ही देन हैं। मूर्ख तो अपनी मूर्खता से केवल अपना ही अहित कर सकता है।"[5] राजनेता नीतियाँ बनाते हैं परन्तु उनका क्रियान्वयन शून्य रहता है। विश्वविद्यालयों और अकादमिक संस्थानों के विद्वान बहस करते हैं, परन्तु आम जनता की पीड़ा को समझ नहीं पाते। समाज सुधारक और विचारक परिवर्तन की बात करते हैं, परंतु उनकी भाषा और सोच आम जन से दूर रहती है।

नया विमर्श और सुरेंद्र शर्मा :

"नया विमर्श" साहित्यिक आलोचना का वह आयाम है जो समाज के वंचित, दलित, स्त्री और श्रमिक वर्ग की आवाज को साहित्य के केंद्र में लाता है। सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे बुद्धिमानों की मूर्खताओं के माध्यम से यह दिखाते हैं कि असल में परिवर्तनकारी विमर्श वही है जो आम आदमी के दुख–दर्द को केंद्र में रखे।

- **दलित विमर्श :** सुरेंद्र शर्मा इस बात पर कटाक्ष करते हैं कि बुद्धिजीवी केवल मंचीय भाषणों तक सीमित रहते हैं, जबकि दलित समाज की वास्तविक समस्याएँ अनदेखी की जा रही है। दलितों को वोट के लिए हथियार

---

4. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ–सुरेंद्र शर्मा–सिर्फ सोफे बेच देने से समस्या हल नहीं हो जाती– पृ. सं.–26
5. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ–सुरेंद्र शर्मा–गद्य में व्यंग्य : नए तेवर के संग–ओमप्रकाश 'आदित्य'–पृ. सं.–12

के रूप में प्रयोग किया जा रहा हैं। उनका मानना है कि "दलितों की इस स्थिति के लिए सबसे बड़े जिम्मेदार हैं –दलित जाति के संपन्न लोग। वे स्वयं या फिर उनके बच्चे उस हरेक नौकरी और सुविधा को हड़प लेते हैं, जिन पर दलित जाति के गरीब लोगों का हक हैं। अगर आरक्षण की सुविधा केवल गरीब दलितों के लिए होती तो उनकी यह दुर्दशा नहीं होती।"[6] इस प्रकार वे यह समाधान प्रस्तुत करते हैं कि व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी गरीबी है।

- **श्रमिक विमर्श :** श्रमिकों और किसानों की समस्याओं को हल करने के बजाय 'बुद्धिमान' नीतिगत जाल बुनते हैं, जिनका व्यावहारिक लाभ शून्य होता है। सुरेंद्र शर्मा किसानों की दयनीय दशा को व्यक्त करते हुए कहते है कि– "मुझे किसानों के ऊपर भयंकर खतरा मँडराता नजर आ रहा है, क्योंकि जब नेता किसी के बारे में सोचने लग जाएँ तो सोच लेना चाहिए कि उसकी शोचनीय स्थिति आने ही वाली है। इस देश के नेता वो पारस हैं कि सोने को छू दें, तो वह लोहा हो जाए!"[7] वे किसानों को नेताओं की चाल को समझने का प्रयत्न करने का आग्रह करते हुए कहते है "हे देश के किसान रूपी अभिमन्युओं! इन कौरवों के बीच तुम्हारी क्या स्थिति होगी, मैं कल्पना भी नहीं कर पा रहा हूँ।"[8]

राजनीति में बुद्धिमानों की मूर्खता :

भारतीय राजनीति में बुद्धिमानों की मूर्खता कई रूपों में सामने आती है –

चुनावी वादों में आदर्शवाद और व्यवहारिकता के बीच गहरी खाई है। लेखक के शब्दों में "सौ करोड़ वोटों का नेताओं ने खयाल रखा, पर सौ करोड़ लोगों और इस देश का खयाल नहीं रखा। वोटर और नेता की स्थिति पुजारी और भगवान की–सी हो गई।"[9] लेखक सामयिक राजनीतिक परिस्थिति को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि चुनाव के समय नेता भक्त और जनता भगवान बन जाते है। चुनाव में जीतने के पश्चात भगवान रूपी जनता को भूल जाते है।

संसद और विधानसभाओं में गंभीर मुद्दों पर चर्चा की बजाय नारेबाजी और टकराव है। इस संदर्भ में लेखक कहते है कि – "तकलीफ यही है दोस्त, इस देश में हम खेलों को गंभीर समस्या समझते हैं और गंभीर समस्याओं को खेल समझ लेते हैं।"[10]

जनता को 'अनपढ़' और 'भोली' कहकर नकारने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी नेता जाने–अनजाने में स्वयं ही सबसे बड़ी राजनीतिक भूलें करते हैं। इस सन्दर्भ में लेखक कहते है कि "मैं प्रधानमंत्री से हाथ जोड़कर कहना चाहता हूँ, कृपया आंतकवादियों को धमकी न दें। आपका कुछ नहीं बिगड़ेगा, हमारे लोग ही मारे जाएँगे। बाल ठाकरे पूरे देश को चुनौती देते हुए कह देते हैं कि मैंने अपना तीसरा नेत्र खोल दिया तो तबाही मच जाएगी।

---

6. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ–सुरेंद्र शर्मा–दलितों को हथियार मिलेंगे या वे हथियार बनेंगे– पृ. सं.–179
7. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ – सुरेंद्र शर्मा –सावधान किसानों ! सरकार सोच रही है – पृ. सं.– 72
8. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ – सुरेंद्र शर्मा –सावधान किसानों ! सरकार सोच रही है – पृ. सं.– 73
9. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ – सुरेंद्र शर्मा –राष्ट्रीय पशु तो है पर राष्ट्रीय मनुष्य कहाँ – पृ. सं.–48
10. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ – सुरेंद्र शर्मा – हर चीज फिक्स है यहाँ – पृ. सं.–22

सुनते ही सरकार कार्रवाई करने की बजाय आँखें बंद कर लेती है।"[11] सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य इस स्थिति पर हँसाते हुए भी सोचने के लिए विवश करते हैं।

समाज का दर्पण : व्यंग्य का प्रभाव :

व्यंग्य का सबसे बड़ा कार्य समाज को वास्तविकता का आईना दिखाना है। सुरेंद्र शर्मा इस भूमिका को पूरी तरह निभाते हैं। मूर्खता का सबसे बड़ा रूप वह है जब बुद्धिजीवी केवल वाद–विवाद और विचार मंचों तक सीमित रह जाते हैं। इसकी पुष्टि लेखक के उक्त कथन से स्पष्ट होती है "ईश्वर न करे, उसकी दी हुई हर चीज साम्प्रदायिक हो जाए। गंगा सिर्फ हिन्दुओं की ही प्यास बुझाए। चाँद सिर्फ मुसलमानों को चाँदनी दे। नदियाँ, पानी, प्रकृति सब अपने–अपने बँटवारे कर लें, अपना–अपना धर्म चुन लें और इसकी परिणति यहाँ तक भी हो सकती है कि किसी दिन हमारा दायाँ हाथ बाएँ हाथ को काट दे कि काम तो मैं ज्यादा करता हूँ, तेरी क्या जरुरत है शरीर में?"[12] देश में प्रचलित सच्चाई का यथावत चित्रण लेखक निर्भीक शब्दों में प्रस्तुत किए हैं। इसमें वे पाठक वर्ग को राजनीति की असलियत को पहचानने में प्रेरित करते हैं। वे यह स्पष्ट करते हैं कि वास्तविक बुद्धिमत्ता वही है जो हाशिए के वर्गों की आवाज सुने। उनका व्यंग्य समाज में संवाद के नए आयाम प्रस्तुत करता है।

व्यंग्य का सामाजिक महत्व :

'बुद्धिमानों की मूर्खता' केवल साहित्यिक कल्पना नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ का सजीव चित्रण है। यह हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या सचमुच हमारी राजनीति और बुद्धिजीवी समाज को बदल रही है, या केवल सत्ता और प्रतिष्ठा की रक्षा कर रही है। शर्मा जी के शब्दों में "नारों से देश का निर्माण नहीं होता, काम से होता है देश का निर्माण।"[13]

"मैं सरकार से कहता हूँ कि ऊपर मत देखो, ऊँचाई की कोई सीमा नहीं है। नीचे देखो, देश के लाखों, करोड़ो, भूखे बेरोजगार मजदूरों की दशा पर कुछ तो सोचो ! आप कहीं इस देश का आर्थिक विकास उनकी लाशों पर तो निर्मित नहीं कर रहे हैं?"[14]

यह व्यंग्य हमें नई दिशा देता है कि वास्तविक विमर्श वही है जो (Marginalized) हाशिये वर्गों की समस्याओं को केंद्र में लाए।

निष्कर्ष :

सुरेंद्र शर्मा की रचना "बुद्धिमानों की मूर्खता" राजनीति में व्याप्त यथार्थता को उजागर करती है। "व्यंग्य चूँकि एक हथियार है, अतः उसका विवेकसंगत प्रयोग नितांत आवश्यक है।" इस दृष्टि से वे हमें सिखाते है कि समाज और राजनीति को समझने के लिए सिर्फ बुद्धिजीवी शब्दा की नहीं, बल्कि व्यवहारिक कुशलता और

---

11. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ– सुरेंद्र शर्मा –सरकार चोर–गुंडों से तो निबट नहीं पाई, आतंकवादियों से क्या खाक निबटेगी – पृ. सं.–45
12. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ – सुरेंद्र शर्मा –यह भी तो साम्प्रदायिकता है – पृ. सं.–34
13. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ – सुरेंद्र शर्मा – पूरा देश गरीबी–रेखा के नीचे होगा – पृ. सं.–50
14. बुद्धिमानों की मूर्खताएँ – सुरेंद्र शर्मा – हिंदी गद्य लेखन में व्यंग्य और विचार–सुरेश कान्त–पृ. सं.– 382

संवेदनशीलता की नितांत आवश्यकता है। यह व्यंग्य नया परिप्रेक्ष्य इसलिए प्रस्तुत करता है क्योंकि यह राजनीति की विडंबनाओं को आमजन की भाषा में, हँसी और कटाक्ष के सहारे सामने रखता है।

अतः सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य में राजनीति केवल शासक और विपक्ष का खेल नहीं रह जाती, बल्कि यह जनता की समस्याओं और आशाओं का आईना बन जाती है। राजनीति देश के भविष्य की निर्णायक शक्ति है, जिसके सकारात्मक प्रयोग से भारत पुनः 'सोने की चिड़िया' बन सकता है।

संदर्भ सूची :

1. सुरेश कान्त, 'हिंदी गद्य लेखन में व्यंग्य और विचार', राधाकृष्ण प्रकाशन, 2013
2. ओमप्रकाश 'आदित्य', 'गद्य में व्यंग्य नए तेवर के संग', 'बुद्धिमानों की मूर्खताएँ', पूजा प्रकाशन, 2003
3. सुरेंद्र शर्मा, 'बुद्धिमानों की मूर्खताएँ', पूजा प्रकाशन, 2003

Email : ranjbabali@gmail.com

Mobile No. 9840426262